Volume : 4 | Issue : 5 | May 2015 • ISSN No 2277 - 8179

shasakiy and Ashaskiy Vidhyalay me Adhyayan me Kaksha Dhasvi ke Vidhyarthiyo ke Nirdeshan ki Aavasyak ka Tulanatmak Adyayan

Education

KEYWORDS : Underdeveloped Economy, Developing Economy, Per Capita Income, Human Capitas.

Dr. (Smt.) Nisha Shrivastava — HOD, (Education Department), Ghanshyam Singh Arya Kanya, Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

Priti Singh — Assistant Professor (Education Dept.) Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना है। निर्देशन की आवश्यकता का मापन करने के लिए डॉ. जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित गाइडेंस नीड्स इन्वेन्टरी का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा दसवीं के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर गाइडेंस नीड्स इन्वेन्टरी उपकरण का प्रशासन करके उनके प्राप्तांक ज्ञात किए गए। प्राप्तांक के आधार पर परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु टी–मूल्य ज्ञात किया गया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना–शिक्षा मानव विकास की गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें निर्देशन का कार्य महत्वपूर्ण है। निर्देशन की आवश्यकता व्यक्ति की समस्याओं के समाधान तथा कठिनाईयो के निवारण हेतु होती है। व्यक्तिगत दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता शैक्षिक विकास व्यावसायिक परिपक्वता तथा वैयक्तिक सामाजिक विकास हेतु होती है। निर्देशन के द्वारा छात्रों की रूचि, क्षमता, योग्यता का पता लगाकर उसकी शैक्षिक कठिनाईयो का समाधान किया जाता है। व्यक्ति की मनोवृत्तियों तथा कौशल क्षमता के अनुसार व्यावसायिक निर्देशन दिया जाता है। निर्देशन का मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। व्यक्ति की निजी समस्याएं उसे असमायोजित करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति अपनी क्षमताओं तथा समस्याओं का निदान निर्देशन में खोजता है। सामाजिक दृष्टि से निर्देशन समाज को स्वस्थ रखने की प्रक्रिया है सही मार्गदर्शन से व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी बन जाता है जिससे समाज उन्नत हो जाता है। मल्होत्रा सतीश (2011) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोरावस्था के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों में निर्देशन की आवश्यकता है। बैस. एम. एवं मांडे (2010) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन की आवश्यकता एवं परामर्श पर अध्ययन करने पर पाया कि निर्देशन एवं परामर्श के साथ मूल्यांकन में सार्थक अंतर है। कूटर (2004) ने उच्च और निम्न सामाजिक –आर्थिक समूह (माता–पिता की आय के आधार पर वर्गीकृत) के छात्रों की शिक्षा और कैरियर प्रगति में अंतर पर अध्ययन करने पर पाया कि वित्तीय चिंता छात्रों के कैरियर चुनाव को प्रभावित करती है। मैक्ग्राथ और मिलेन (2003) ने उच्च शिक्षा में प्रवेश के सभी चरणों में 16–19 साल के छात्रों के विकल्पों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया और पाया कि वित्तीय समर्थन के बारे में अधिक जानकारी आवश्यक है।

उद्देश्य

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के शारीरिक निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के सामाजिक निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु दुर्ग क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय से 200 विद्यार्थियों (100 विद्यार्थी शासकीय विद्यालय एवं 100 विद्यार्थी अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत) का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि से किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध–अध्ययन में निर्देशन की आवश्यकता का मापन करने के लिए डॉ. जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित गाइडेंस नीड्स इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा दो समूहों के मध्य अंतर की सा. र्थकता को ज्ञात किया गया है।

परिकल्पना, परिणाम एवं विवेचना

परिकल्पना H_1 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_2 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के शारीरिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_3 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के सामाजिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

परिकल्पना H_4 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_5 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के षैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_6 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों क

व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 01

क्र.		तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	कि	सार्थकता
1	निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	112	24.2	6.84	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	135	23.4			
2	शारीरिक निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	14.3	3.2	6.6	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	17.5	3.7			
3	सामाजिक निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	24.5	7.5	6.8	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	30.5	4.7			
4	मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	27.5	4.8	4.86	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	31	5.5			

5	षैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	28.1	5.5	8.51	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	35	6			
6	व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकता	शासकीय विद्यालय	100	18	3.5	3.56	198	च्ढ0ण्05
		अशासकीय विद्यालय	100	14.5	4.2			

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों केनिर्देशन की आवश्यकता

निष्कर्ष – सारणी क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के शारीरिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर है। फलतः परिकल्पना H1,H2, H3 ,H4, H5, H6 अस्वीकृत होती है।

प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर है। अशासकीय विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी उच्च आर्थिक एवं शैक्षिक वर्ग से संबंधित होते है उनकी मनोकांक्षा, जीवन–स्तर विद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं शासकीय विद्यालय की अपेक्षा भिन्न होता है जिसका प्रभाव निर्देशन की आवश्यकता पर भी पड़ता है।

सुझाव

विद्यालय में निर्देशन सेल की स्थापना की जाए जो कि छात्रों की निर्देशन संबंधी समस्याओं का समाधान करें तथा निर्देशन प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाए।

शिक्षकों को निर्देशन संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

विद्यार्थियों के साथ–साथ अभिभावकों को भी निर्देशन प्रदान किया जाए जिससे कि वे अपने बालकों की रूचि एवं योग्यता को महत्व दे।

विद्यालयों में निर्देशन संबंधी मानवीय एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध होने चाहिए जिससे निर्देशन प्रक्रिया सुचारू रूप सके चल सके।

निर्देशन के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों में जागरूकता उत्पन्न की जाए जिससे कि निर्देशन को एक आवश्यक एवं विकास से सम्बंधित सहायता के रूप में स्वीकार किया जाए।

REFERENCE

• Asthana, B. (2009), Measurement and Evolution in Psychology, Agra; Vinod Pustak Mandir, Pg. 57-89 | • Baise, M. and Mande (2010). A study of guidance needs and counseling of Secondary School Students in this State. "Journal of Counseling" 3.1 Pg. 87-89. | • Bhatnagar, H.(1983). A Vocational Study of guidance needs in adolescence students. "Research in Counseling". 587. | • Farnandis, L. (1984). A study of guidance for Educational Achievement in adolescence "Internation Journal". | • Malhotra, S. (2011). A Comparative Study of adolescence Students in Secondary School. "International Research Journal". Pg. 27. |